School of Humanities

Certificate

I hereby declare that the short synopsis **"उपनिषदों में वर्णित अन्न की अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन"** being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in **Sanskrit and Prakrit Language** under School of Humanities of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2022-23.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. Vinod Kumar Gupta and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the report has been submitted.

Digvijay Singh
En. No.- 2101001

Research Supervisor:-

Prof. Vinod Kumar Gupta
Faculty of Sanskrit

Prof. Satyapal Tiwari
Director of School of Humanities

Prof. P. K. Pandey
Director, R&D Cell

"उपनिषदों में वर्णित अन्न की अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of
DOCTOR OF PHILOSOPHY IN SANSKRIT AND PRAKRIT LANGUAGE

to

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

Digvijay Singh
En. No.- 2101001

Under the Supervision of
Prof. Vinod Kumar Gupta
Faculty of Sanskrit

School of Humanities
U.P. Rajarshi Tandon Open University
Shantipurm, (Sector –F) Phaphamau, Prayagraj – 211021

ABSTRACT :-

वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व जनसंख्या समस्या से जूझ रहा है जैसे-जैसे जनसंख्या में वृद्धि होती जा रही है, वैसे-वैसे खाद्यापूर्ति की भी विकट समस्या बढ़ती जा रही है। अतः ऐसी स्थिति में हमें किसी ऐसे मार्ग को अपनाने की आवश्यकता है जिससे सभी प्राणियों के जीने के लिए अन्न उपलब्ध हो सके। यद्यपि सम्पूर्ण विश्व अब इस तरफ उन्मुख हो रहा है, किन्तु उसके जो भी कदम हैं वे प्रभावी तभी हो सकते हैं, जब प्रत्येक मनुष्य को अन्न की महत्ता से अवगत कराया जाए। प्राचीन समाज अध्यात्म पर अधिक विश्वास करता था तथा परम्परागत ज्ञान को सम्पूर्णतः आत्मसात् भी करता था, जहाँ अन्न को देवतुल्य समझा जाता था। किन्तु वर्तमान समाज अतिभौतिकतावादी मानसिकता से ग्रस्त हो गया है और अन्न को केवल एक खाद्य पदार्थ के रूप में देखता है, जबकि ऋषियों ने अन्न को 'ब्रह्म' की संज्ञा दी है- 'अन्नं वै ब्रह्म'। अतः जनसंख्या के अतिरिक्त खाद्य समस्या का एक प्रमुख कारण यह भी है कि अन्न को केवल खाद्य पदार्थ के रूप में देखना और उसका अनादर करना। अतः लोगों में अन्न संरक्षण के प्रति उत्पन्न अरुचि को शोध के माध्यम से समाप्त करना इस शोध-कार्य का अन्तिम लक्ष्य हैं।

Keywords :- *उपनिषद् ; अन्न ; अन्नब्रह्म ; खाद्य-सुरक्षा ; पोषण ; शून्य-भूख ; विश्व खाद्य कार्यक्रम ; खाद्य एवं कृषि संगठन ।*

Digvijaay Singh

1. Introduction :-

'उपनिषद्' शब्द 'उप' और 'नि' उपसर्ग पूर्वक 'सद्' धातु में 'क्विप्' प्रत्यय लगने से निष्पन्न होता है। पाणिनि धातु पाठ में उपनिषद् शब्द के तीन अर्थ किये गये हैं-

'षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु'

१. विशरण - नाश होना (संसार की मूलभूत अविद्या का)

२. गति - प्राप्त होना, जानना (ब्रह्म की प्राप्ति / ज्ञान)

३. अवसादन - क्षय या क्षीण होना (मनुष्य के दु:ख या बन्धन का)

अमरकोष में उपनिषद् शब्द का अर्थ बतलाते हुए कहा गया है कि- **'धर्मे रहस्युपनिषद् स्यात्'** अर्थात् उपनिषद् शब्द गूढ, धर्म एवं रहस्य के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

उपनिषदों की संख्या- उपनिषदों की संख्या के विषय में विविध प्रकार के मत दृष्टिगत होते हैं। कहीं पर इन उपनिषदों की संख्या नौ, कहीं पर दश तथा कहीं पर एकादश मानी गयी है। इसके अतिरिक्त भी कहीं-कहीं पर १०८ (मुक्तिकोपनिषद् में) और २२० उपनिषदों की संख्या मिलती है। किन्तु जिन उपनिषदों पर शाङ्करभाष्य उपलब्ध है, उन्हीं को प्रामाणिक माना गया है। मुक्तिकोपनिषद् में उल्लिखित १०८ उपनिषदों की सूची में भी जिन उपनिषदों को मुख्य माना गया है, वे निम्न हैं-

ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरिः ।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा ।।

अन्न की दृष्टि से तैत्तिरीयोपनिषद् आदि की अधिक महत्ता है क्योंकि सम्बन्धित विवेचन में ये सम्पूर्ण उपनिषद् ही अन्न की महत्ता बतलाने में समर्पित हैं।

Digvijaay Singh

2. Literature Review :-

शोधार्थी ने विभिन्न अन्तर्जालीय स्रोतों पर जाकर पूर्व में हुए शोध-कार्यों को जानना चाहा, जहाँ प्रस्तावित शोध-कार्य से सम्बन्धित निम्नलिखित पूर्ववर्ती शोध-कार्य प्राप्त हुए-

- ❖ शाङ्करभाष्यसन्दर्भे उपनिषत्सु प्रणवस्वरूपविमर्शः, कृष्णा आर्य, पीएच.डी. दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, २०१६
- ❖ The concept of Atman in the Principal upnisads, Baldevraj Sharma, Delhi University, 1972.
- ❖ An Epistemological study of Sankarbhasya on Prasthantrayi, Ram Nath Jha, Delhi University, 1999
- ❖ प्रमुख उपनिषदों में गहन-पारिस्थितिकीय चिन्तन, प्रियंका उपाध्याय, विशिष्ट संस्कृताध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

उपर्युक्त शोध-कार्यों के अवलोकन के पश्चात अन्न के सन्दर्भ में कुछ विशिष्ट दृष्टियाँ प्राप्त हुई जिससे शोधार्थी द्वारा इस शोध-विषय को चुना गया। इन उपर्युक्त शोध-कार्यों में कहीं अन्न को प्रणव रूप में दर्शाया गया है तो कहीं आत्मा से इसके साम्य को बतलाया गया है। कहीं अन्न के वर्तमान सन्दर्भ में पारिस्थितिकीय महत्त्व को उद्धृत किया गया है तो कहीं पर अन्न के ज्ञानमीमांसा द्वारा इसके सार्वभौमिक स्वीकार्यता एवं आवश्यकता पर बल दिया गया है।

3. Description Broad Area :-

समसामयिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए इस कार्यक्षेत्र में शाङ्करभाष्य सहित ईशादि नौ उपनिषद्, (शाङ्करभाष्य सहित) बृहदारण्यकोपनिषद्, (शाङ्करभाष्य सहित) छान्दोग्योपनिषद्, प्रमुख उपनिषदों पर अन्य महत्त्वपूर्ण भाष्यों एवं अन्य उपनिषदों के अतिरिक्त भारत सरकार, स्वायत्त संस्थाओं तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की सहयोगी संस्थाओं द्वारा जारी खाद्य सुरक्षा कार्यक्रमों, विवरणों आदि के साथ-साथ अन्य समसामयिक भी इस शोध-कार्य के क्षेत्र के अध्ययन के लिए उपादेय होंगे।

Digvijay Singh

प्रस्तावित अध्याय विभाजन

प्रथमाध्याय

❖ **उपनिषद् साहित्य का परिचयात्मक अध्ययन**

- उपनिषद् शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ
- उपनिषदों की संख्या एवं प्रमुख उपनिषद्
- उपनिषद् का प्रतिपाद्य विषय
- उपनिषदों का रचनाकाल
- उपनिषदों का महत्त्व

द्वितीयाध्याय

❖ **उपनिषदेतर संस्कृत साहित्य में अन्न तत्त्व की अवधारणा**

➢ **अन्न का सामान्य परिचय एवं वैदिक वाङ्मय में अन्न तत्त्व की अवधारणा**

- 'अन्न' शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ
- अन्न के प्रकार एवं उनके नाम
- वेदों में अन्न के सन्दर्भ
- ब्राह्मण ग्रन्थों में अन्न
- आरण्यकों में अन्न

➢ **लौकिक संस्कृत में अन्न तत्त्व की अवधारणा**

- पुराणों में अन्न
- महाकाव्यों में अन्न
- नाटकों में अन्न
- गद्यकाव्यों में अन्न
- खण्डकाव्यों (गीतिकाव्य) में अन्न
- कथा-साहित्यों में अन्न
- अन्य स्रोतों में अन्न

Digvijaay Singh

तृतीयाध्याय

❖ प्रमुख उपनिषदों में अन्न तत्त्व की अवधारणा

- तैत्तिरीयोपनिषद् में अन्न
- बृहदारण्यकोपनिषद् में अन्न
- छान्दोग्योपनिषद् में अन्न
- ऐतरेयोपनिषद् में अन्न
- प्रश्नोपनिषद् में अन्न
- मुण्डकोपनिषद् में अन्न
- श्वेताश्वतरोपनिषद् में अन्न
- कौषीतकिब्राह्मणोपनिषद् में अन्न

चतुर्थाध्याय

❖ गौण उपनिषदों में अन्न तत्त्व की अवधारणा

- मैत्रायण्युपनिषद् में अन्न
- शिवोपनिषद् में अन्न
- महानारायणोपनिषद् में अन्न
- संन्यासोपनिषद् में अन्न
- सुबालोपनिषद् में अन्न
- गणेशपूर्वतापिन्युपनिषद् में अन्न
- अन्नपूर्णोपनिषद् में अन्न
- प्राणाग्निहोत्रोपनिषद् में अन्न
- नारदपरिव्राजकोपनिषद् में अन्न
- शेष अन्य उपनिषदों में अन्न

पञ्चमाध्याय

❖ अन्न तत्त्व का पारिस्थितिकीय विश्लेषण

- वर्तमान में अन्न संरक्षण एवं संवर्धन की प्रासङ्गिकता
- संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन- १९४५
- अन्तर्राष्ट्रीय अनाज परिषद्-१९४९

- विश्व खाद्य कार्यक्रम- १९६१
- सार्क फूड बैंक- १४वाँ शिखर सम्मेलन, २००७
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन-२००७
- खाद्य सुरक्षा विधेयक- २०१०
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, २०१३
- भारत सरकार द्वारा जारी खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम
- खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग, भारत सरकार
- खाद्यान्न कूपन प्रणाली, बहु उपयोगी स्मार्ट कार्ड, बफर स्टॉक आदि
- एक देश एक राशनकार्ड (वन नेशन वन राशनकार्ड) योजना, २०१९

4. Objectives of the Study :-

सम्पूर्ण जगत् में समानान्तर दो धाराएं चलती चली आ रही हैं। एक जो अन्न को पूज्य मानता है और उसके संरक्षण और संवर्धन की भी बात करता है, वहीं दूसरी धारा अन्न को भूख मिटाने का साधन मात्र मानता है। यही भ्रम की स्थिति दोनों धाराओं में अलगाव का मूल है। यही कारण है कि उपनिषदों में बताई गई अन्न की महत्ता से आज का भौतिकतावादी समाज सरोकार नहीं रखता है। किन्तु अब दुनिया इस पर मुखर होकर बात कर रही है। अतः प्रस्तुत शोधकार्य का मूल उद्देश्य इन दोनों धाराओं में सामंजस्य का प्रसार करना है। एक ओर जहाँ संयुक्त राष्ट्र संघ के १७ संधारणीय/सतत विकास लक्ष्यों में 'शून्य भूख' दूसरा सबसे बड़ा लक्ष्य है, जो मानवता को चुनौती दे रहा है तो संयुक्त राष्ट्र की खाद्य-सहायता शाखा (विश्व खाद्य कार्यक्रम) की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में आठ सौ अठाईस (८२८) मिलियन लोग (हर नौ में से एक) अभी भी हर रात खाली पेट बिस्तर पर जाते हैं। जबकि हर तीन में से एक कुपोषण के किसी न किसी रूप से पीड़ित है। वहीं उपनिषदों में श्रुति का यह आदेश है कि अन्न की निन्दा व तिरस्कार न करें। अन्न का अधिकाधिक संग्रह करें। अतः परम्परागत ज्ञान का उपयोग करते हुए सामान्यजनों में परम्परा के प्रति उत्पन्न अरुचि को शोध के माध्यम से समाप्त करना तथा भावी शोध के लिए उपयुक्त सामग्री उपलब्ध कराना शोधार्थी के प्रस्तावित शोधकार्य का उद्देश्य होगा।

Digvijaay Singh

5. Research Methodology :-

सामग्री संकलन के लिए सर्वेक्षण-पद्धति से आवश्यक सामग्री तक पहुँच सुनिश्चित की जाएगी। मूलभूत तथ्य हेतु कार्ड-विधि द्वारा शोध के लिए उपयोगी सामग्री का संकलन किया जाएगा। सामग्री विश्लेषण हेतु प्रस्तावित शोधकार्य से सम्बन्धित मौलिक ग्रन्थों एवं उस पर प्राप्त टीकाओं एवं व्याख्याओं के अध्ययन हेतु विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा तुलनात्मक शोध-प्रविधि का आश्रय लिया जाएगा।

6. Expected Outcome of the Research :-

यदि 'अन्न' के नियमों का सम्यक् पालन किया जाए तो वर्तमान में उत्पन्न अन्न-संकट दूर किया जा सकता है।

References :-

प्राथमिक स्रोत

- ईशादि नौ उपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्यसहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० २०६६
- छान्दोग्योपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्य सहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० २०६०
- ऐतरेयोपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्य सहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० २०६१
- प्रश्नोपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्य सहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० २०६१
- श्वेताश्वतरोपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्यसहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० १९९५
- मुण्डकोपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्यसहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० १९९२
- तैत्तिरीयोपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्य सहित), घनश्यामदास जालान गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण- २०००
- बृहदारण्यकोपनिषद् (सानुवाद शाङ्करभाष्यसहित), घनश्यामदास जालान गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण - १९९९
- कौषीतकिब्राह्मणोपनिषद् Upnishad. SHDVEF. (n.d.). Retrieved July 23, 2022, from https://www.shdvef.com/religious-scriptures/upnishad/

- ❖ ईशादि नौ उपनिषद् , व्याख्याकार- हरिकृष्णदास गोयन्दका, घनश्यामदास जालान गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण - सम्वत् २०१४
- ❖ एकादशोपनिषद् - डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार, विजयकृष्ण लखनपाल, W-७७, ए ग्रेटर कैलाश (१) नई दिल्ली- ४८
- ❖ बृहदारण्यकोपनिषत् (आनन्दगिरिकृतटीकासंवलित शाङ्करभाष्यसमेता) - स्वामी विष्णुदेवानन्द गिरि जी महाराज एवं स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज, टीकाकार एवं सम्पादक - डॉ. उमेशानन्द शास्त्री, श्री कैलाश आश्रम शताब्दी समारोह महासमिति मुनि की रेती, ऋषिकेश, संस्करण - वि. सं० २०३६
- ❖ १०८ उपनिषद् (ब्रह्मविद्याखण्ड) - पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य, युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उ.प्र.), संस्करण - २००५
- ❖ १०८ उपनिषद् (ज्ञानखण्ड) - पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य, युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उ.प्र.), संस्करण - २००५
- ❖ १०८ उपनिषद् (साधनाखण्ड) - पण्डित श्रीराम शंर्मा आचार्य, युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उ.प्र.), संस्करण - २००५
- ❖ उपनिषत्सञ्चयनम् , अनुवादक - आचार्य केशवलाल वि. शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान ३८ यू. ए. जवाहर नगर, बंगलो रोड, दिल्ली - ११०००७, संस्करण - २०१५
- ❖ कल्याण उपनिषद्-अङ्क, सम्पादक - हनुमान प्रसाद पोद्दार एवं चिम्मनलाल गोस्वामी घनश्यामदास जालान गीताप्रेस, गोरखपुर

द्वितीयक स्रोत

- ❖ तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यवार्तिक - सुरेश्वराचार्य, अनुवादक - राधेश्याम शास्त्री, मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशन्स १ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-२
- ❖ बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यम् - श्री पण्डित शिवशङ्कर शर्मा काव्यतीर्थ, हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्झर रोहतक, संस्करण - २००० ई.
- ❖ उपनिषद् प्रकाश - डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार, संस्कार प्रकाशन ४४०८, नई सड़क दिल्ली - ११०००६, संस्करण - २०००
- ❖ उपनिषद् दर्शन का रचनात्मक सर्वेक्षण, आर.डी. रानाडे, अनु. रामानन्द तिवारी, प्रका. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, १९७१

Digvijay Singh

- ❖ उपनिषद् रहस्य (एकादशोपनिषद) - स्व. श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज, विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द ४४०८ नई सड़क दिल्ली ११०००६, संस्करण - २०१४
- ❖ उपनिषदों की भूमिका, डॉ. एस. राधाकृष्णन्, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, १९८१
- ❖ उपनिषद् वाङ्मय : विविध आयाम, वेदवती वैदिक, १९९७
- ❖ उपनिषदों के निर्वचन - डॉ. वेदवती वैदिक, नाग पब्लिशर्स ११-ए (यू. ए.) जवाहर नगर, दिल्ली ११०००७, संस्करण - २००३ ई.
- ❖ सिर्रे अक्बर सहित सानुवाद उपनिषत्-समुच्चय (प्रथम खण्ड) - शाहजादः मुहम्मद दाराशिकोह, सम्पादक एवं अनुवादक - डॉ. हर्षनारायण, भुवन वाणी ट्रस्ट 'प्रभाकर निलयम्' ४०५/१२८ चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३, संस्करण - १९७५ ई.
- ❖ The Principal Upanisads, S.Radhakrishnan, Harper Collins Publishers, India, New Delhi: 1953.
- ❖ The Upanisads, Max Mueller, translator, part I, Dover Publications, Inc. New York: 1962
- ❖ THE NIRUKTA OF YASKA - Prof. Uma Shankar Sharma 'Rishi', THE CHOWKHAMBA VIDYA BHAWAN POST BOX 69, VARANASI-1 (India)
- ❖ संस्कृत साहित्य का इतिहास - डॉ० उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' चौखम्भा भारती अकादमी पो० ऑ० बॉक्स नं० १०६५ 'गोकुल भवन' के. ३७/१०९ , गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी- २२१००१ (भारत), संस्करण- २०१९
- ❖ संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायणलाल विजयकुमार २, कटरा रोड, इलाहाबाद- २११००२, संस्करण- २०१३
- ❖ वैदिक साहित्य एवं संस्कृति (वैदिक साहित्य का इतिहास) - डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन पोस्ट बॉक्स नं० ११४९, विशालाक्षी भवन (भूगर्भ तल), चौक, वाराणसी- २२१००१, संस्करण- २०१५
- ❖ ऋग्वेद - डा. गंगा सहाय शर्मा व्याकरणाचार्य, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, संस्करण २०१६
- ❖ यजुर्वेद - डा. गंगा सहाय शर्मा व्याकरणाचार्य, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, संस्करण २०१६

Digvijay Singh

- ❖ सामवेद - डा. गंगा सहाय शर्मा व्याकरणाचार्य, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, संस्करण २०१६
- ❖ अथर्ववेद - डा. गंगा सहाय शर्मा व्याकरणाचार्य, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, संस्करण २०१६

कोश ग्रन्थ

- ❖ औपनिषदिक-पदानुक्रम-कोषः (प्रथम भाग) - प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री एवं डॉ. विजय कुमार त्यागी, सम्पादक - निशान्त कुमार, परिमल पब्लिकेशन २७/२८, शक्तिनगर, दिल्ली- ११०००७, संस्करण - २०१५ ई.
- ❖ प्रस्थानत्रयी-पदानुक्रम-कोषः - प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री एवं डॉ. विजय कुमार त्यागी, सम्पादक - निशान्त कुमार, परिमल पब्लिकेशन २७/२८, शक्तिनगर, दिल्ली- ११०००७, संस्करण - २०१४ ई.
- ❖ वैदिक-पदानुक्रमकोश (मौरिस ब्लूमफील्ड का देवनागरी संस्करण), सम्पादक - सुनील कुमार उपाध्याय, परिमल पब्लिकेशन २७/२८, शक्तिनगर, दिल्ली- ११०००७, संस्करण - २००४ ई.
- ❖ संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, सम्पादक - स्वर्गीय चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा तथा पण्डित तारिणीश झा, रामनारायणलाल बेनीप्रसाद प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता इलाहाबाद - २, संस्करण - १९७१ ई.
- ❖ वैदिक कोश (भाग १) - पं० चन्द्रशेखर उपाध्याय एवं श्री अनिल कुमार उपाध्याय, नाग प्रकाशक ११ ए/यू. ए. जवाहर नगर, दिल्ली- ११०००७, संस्करण - १९९५ ई.
- ❖ अमरकोष, अमरसिंह, व्याख्याकार एवं सम्पादक - पण्डित हरगोविन्द शास्त्री, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, पो० बॉ० नं० ११३९ के. ३७/११६, गोपाल मन्दिर लेन (गोलघर समीप मैदागिन) वाराणसी- २२१००१ (भारत), संस्करण - वि० सं० २०७२
- ❖ संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश, वामन शिवराम आप्टे, सम्पादक - डॉ. उमा प्रसाद पाण्डेय, कमल प्रकाशन १७००, कूँचा दखनी राय, नियर पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली- ११०००२
- ❖ वाचस्पत्यम् , तर्कवाचस्पति तारानाथ भट्टाचार्य, चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी-१, १९६२

❖ शब्दकल्पद्रुमः, स्यार राजा राधाकान्तदेव बाहादुर, चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी-१, १९६७

अन्तर्जालीय स्रोत

❖ https://www.shdvef.com/religious-scriptures/upnishad/

❖ www.sanskritlibrary.org

❖ www.wikipedia.com

❖ www.hindunet.com

❖ www.sanskritvishvam.com

❖ www.archive.org

❖ www.lib.jnu.ac.in

❖ www.ndl.iitkgp.ac.in

❖ https://pib.gov.in

❖ www.india.gov.in

❖ www.wfp.org

❖ www.fao.org

❖ https://dfpd.gov.in/nfsa-act-hi.htm

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language	Hindi

Submission Information

Author Name	Digvijay Singh
Title	उपनिषदों में वर्णित अन्न की अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन
Paper/Submission ID	3620831
Submitted by	rjmauryauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-05-16 11:51:45
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**2%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Digvijaay Singh

DrillBit

DrillBit Similarity Report

2	5	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	1	Publication
2	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	1	Publication
3	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
4	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
5	Paper Submitted to Magadh University, Bodh Gaya	<1	Student Paper